विचार बिन्दु

दूसरे धर्मों की निंदा करना गलत है। सच्चा व्यक्ति वह है जो दूसरे धर्मों की भी हर उस बात का सम्मान करता है जो सम्मान के लायक है।

- सम्राट अशोक

ईवीएम का विरोध-कितना सही, कितना गलत?

ईवीएम यानी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन, पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। विपक्षी दल और सुप्रीम कोर्ट के कुछ वकील इसका विरोध कर रहे हैं। इसका विरोध कितना सही है या गलत, यह निर्णय करने के लिए आवश्यक है कि हम इसके संबंध में तथ्यात्मक जानकारी पाठकों को उपलब्ध कराएं।

अधिकांश लोगों को तो यह पता ही नहीं है कि पहले चुनाव होते कैसे थे? स्वतंत्र होने के बाद भारत में पहला आम चुनाव 1951 में हुआ और 21 वर्ष से अधिक आयु के सभी नागरिकों को मत देने का अधिकार प्राप्त हुआ। ऐसा विश्व के बहुत कम देशों में हुआ कि स्वतंत्रता के तत्काल बाद सबको मताधिकार प्राप्त हो गया, चाहे वह गरीब हो या अमीर, पुरुष हो या महिला। जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे, तब मतदान करने के लिए न्यूनतम आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष की गई।

1977 तक मतदान के लिए जितने भी उम्मीदवार होते थे ,उनके नाम एवं उनका चुनाव चिन्ह कागज़ के मत पत्र पर छपाये जाता थे एवं मतदाता अपनी पसंद के अनुसार सील लगाकर उसे बैलट बॉक्स (मत पेटी)में डाल देते थे। मतगणना के दिन लोकसभा/विधानसभा क्षेत्र के सभी मतदान केंद्र से प्राप्त मत पेटियों को खोलकर राजनीतिक दलों के एजेंटों के सामने मतपत्रों को गिना जाता था। जिसे सर्वाधिक मत प्राप्त होते, उसे निर्वाचन अधिकारी द्वारा निर्वाचित घोषित कर दिया जाता था। इसका एक नुकसान यह था कि किसी भी मतदान केंद्र के क्षेत्र में से किसे समर्थन मिला है यह पता करना आसान हो जाता था और इसके आधार पर कई बार राजनीतिक पक्षपात भी किया जाता था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 1977 में पहली बार एक विधानसभा क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रों के मत पत्रों को बिना खोले हुए गिनती की गई। इसके बाद उनके 50-50 के बंडल बनाकर उन्हें एक बड़े से ड्रम में डालकर हिला दिया जाता था। और बाद में इन गड्डियों को गिनने के लिए अलग-अलग गणना टेबलों पर दिया जाता था , जहां इन्हें खोलकर उम्मीदवार वार गणना की जाती थी। इससे यह पता लगाना संभव नहीं होता था कि किस क्षेत्र,मोहल्ले या गांव में किस दल या उम्मीदवार का वर्चस्व है? इससे किसी को भी प्रताड़ना और उपेक्षा का भागीदार होने से मुक्ति मिल जाती थी।

मत पत्रों की गणना में समय अवश्य लगता था और कई बार एक से दो दिन तक परिणाम नहीं आता था। प्रथम और द्वितीय उम्मीदवार के बीच में मतों के अंतर बहुत कम होने पर पुनः गणना करनी पड़ती जिससे अतिरिक्त एक-दो दिन लग जाते थे। इन्हीं सब परेशानियों को देखते हुए पहली बार प्रयोग के तौर पर 1982 में केरल के एक विधानसभा क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के माध्यम से चुनाव करवाए गए। 2003 के बाद पूरे देश में चुनाव ईवीएम के माध्यम से होने लगे। इससे मतगणना का काम बहुत सरल हो गया और 4- 5 घंटे में परिणाम घोषित होने लगे। इसके बाद अब पुनः केंद्रवार गिनती होने लगी और जो लाभ काग़ज़ के मतपत्रों वाली प्रक्रिया में था, वह समाप्त हो गया।

पाठकों के लिए जानना उपयुक्त होगा कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के दो भाग होते हैं, एक कंट्रोल यूनिट जो कि पीठासीन अधिकारी के पास रहता है एवं दूसरा बेलट यूनिट जिसके माध्यम से मतदाता वोट देता है। वह अपनी पसंद के उम्मीदवार के आगे वाले बटन को दबाकर अपने मत का प्रयोग करता है। अलग-अलग उम्मीदवारों को डाले गए मतों की गिनती कंट्रोल यूनिट में दर्ज होती रहती है। कुल डाले गए मतों की संख्या तो पीठासीन अधिकारी समय-समय पर ज्ञात कर सकता है, किंतु उम्मीदवार वार मतों की गणना ,गणना के दिन ही की जाती है। इसके लिए लिए कंट्रोल यूनिट की सील तोड़कर परिणाम ज्ञात किया जाता है। मतदान के दिन मशीन खराब होने पर उसे बदलने की भी कार्रवाई होती है। उस समय तक जितने मत पड़ जाते हैं उनका विवरण कंट्रोल यूनिट में रहता है एवं उसके आगे की कार्रवाई नई मशीन में दर्ज हो जाती है।गणना के समय दोनों को काम में लेकर गिनती की जाती है।

जब से वीवी पेट मशीन को काम में लेना शुरू किया है तब से ईवीएम एक स्वतंत्र इकाई नहीं रह गई है। आज के तकनीकी युग में बिना हाथ लगाए भी उसे रिमोट से प्रभावित करना संभव है। विपक्षी दल चाहते हैं कि उन्हें अपनी आपत्तियों को दर्ज कराने के लिए निर्वाचन आयोग मिलने का समय दे। निर्वाचन आयोग ने अभी तक उन्हे मिलने का समय नहीं दिया है। इस पूरी प्रक्रिया में सबसे बड़ी बात यह है कि मतदाता यह सुनिश्चित नहीं कर सकता है कि जिस व्यक्ति को उसने मत दिया, उसी के खाते में उसका मत गया या नहीं। तत्कालीन विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता लालकृष्ण आडवाणी ने ईवीएम का विरोध किया था। तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने इन सभी विरोधों का जवाब देते हुए यह स्पष्ट कर दिया था कि ईवीएम से किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ संभव नहीं है क्योंकि यह अपने आप में स्वतंत्र इकाई है।

अब हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि ईवीएम का विरोध किस आधार पर हो रहा है? विरोध के प्रमुख तीन कारण हैं, पहला यह कि मतदाता को यह विश्वास नहीं हो पाता है कि जिसको उसने मत दिया है उसी को मत मिला है। दूसरा यह कि जब से वीवीपेट लगाई, तब से उसे चिन्ह तो खिड़की में से दिखता है, किंतु उसकी पर्ची उसे प्राप्त नहीं होती है। इस कारण यह शंका उत्पन्न की जा रही है कि जो चुनाव चिन्ह वीवी पेट की खिड़की में से दिखता है वह आवश्यक नहीं है कि पर्ची पर भी वही अंकित हो। तीसरा यह कि वीवीपेट की खिड़की जो पहले पारदर्शी थी उसे अब काला करके अंदर बल्ब लगा दिया गया है। अतः उसके अंदर देखना इतना सरल नहीं है क्योंकि उसके लिए समय केवल 7 सेकंड का ही होता है। इसके बाद बल्ब बंद हो जाता है। विरोधियों की मांग है कि वीवीपेट की पर्ची मतदाता को दी जाए जिसे वह वहां रखे डिब्बे में डाल सके। डिब्बे में डाली गई सारी पर्चियों को गणना के दिन गिना जाय। ऐसा करना कोई बहुत उपयोगी नहीं लगता क्योंकि इससे मतदान केंद्र पर झगड़ा होने की संभावना भी है क्योंकि यदि मतदाता कहेगा कि उसने एक चिन्ह का बटन दबाया किन्तु पर्ची उसे दूसरे चुनाव चिन्ह की मिली तो, उसका सत्यापन करना मतदान अधिकारी के लिए संभव नहीं हो पाएगा और विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

जब से वीवी पेट मशीन को काम में लेना शुरू किया है तब से ईवीएम एक स्वतंत्र इकाई नहीं रह गई है। आज के तकनीकी युग में बिना हाथ लगाए भी उसे रिमोट से प्रभावित करना संभव है। विपक्षी दल चाहते हैं कि उन्हें अपनी आपत्तियों को दर्ज कराने के लिए निर्वाचन आयोग मिलने का समय दे। निर्वाचन आयोग ने अभी तक उन्हे मिलने का समय नहीं दिया है। इस पूरी प्रक्रिया में सबसे बड़ी बात यह है कि मतदाता यह सुनिश्चित नहीं कर सकता है कि जिस व्यक्ति को उसने मत दिया, उसी के खाते में उसका मत गया या नहीं। तत्कालीन विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता लालकृष्ण आडवाणी ने ईवीएम का विरोध किया था। तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने इन सभी विरोधों का जवाब देते हुए यह स्पष्ट कर दिया था कि ईवीएम से किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ संभव नहीं है क्योंकि यह अपने आप में स्वतंत्र इकाई है।

चुनाव आयोग ने कुछ साल पहले चुनौती देने वाले लोगों को यह अवसर दिया था कि वह यह सिद्ध करें कि ईवी एम को हैक किया जा सकता है। ऐसा करने के लिए उन्हें मशीन को छूने की मनाई थी। इसी कारण कोई चुनौती को सिद्ध करने हेतु नहीं पहुंचा। तब से गत कुछ वर्षों में कंप्यूटर टेक्नोलॉजी में और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में बहुत तेजी से विकास हुआ है और इस कारण अब ई वी एम से छेड़छाड़ की संभावना बढ़ गई है। विरोधी दलों की तो प्रमुख मांग यही है कि चुनाव पुराने तरीके से अर्थात कागज के मत पत्रों से ही कराया जाए ताकि सभी प्रकार के संदेहों को समाप्त किया जा सके। यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश विकसित देशों में कागज के मत पत्रों का ही प्रयोग किया जा रहा है। यह सब केवल मतदाता का विश्वास, चुनावी प्रक्रिया में बनाए रखने के लिए है।

विपक्षी दल अपनी बात कहने के लिए मिलने हेतु चुनाव आयोग से समय मांग रहे हैं किंतु समय नहीं दिया जा रहा है। इस सम्बंध में आजकल दिल्ली में विरोध प्रदर्शन चल रहे हैं और कुछ वकील और विशेषज्ञ एक डमी ईवीएम के माध्यम से वीवी पेट मशीन में यह दिखा रहे हैं कि मतदाता वोट किसी को देता है और वह जाता किसी और को है। कांग्रेस के नेता जयराम रमेश द्वारा एक पत्र, अपने संदेह को व्यक्त करते हुए चुनाव आयोग को लिखा गया किंतु चुनाव आयोग द्वारा उन्हें बुलाने के बजाय एक 9 - 10 पेज का उत्तर भिजवा दिया गया है। मतदाता का विश्वास चुनाव प्रक्रिया में होना लोकतंत्र की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पहले जो कागज के मतपत्र होते थे उनमें इस प्रकार की शंका नहीं होती थी। हाँ, बूथ पर कब्जा करने की घटनाएँ अवश्य कुछ राज्यों में होती थीं। अब इसकी संभावना नगण्य है क्योंकि मतदान केंद्रों पर पर्याप्त मात्रा में अर्ध सैनिक बलों की तैनाती की जाती है। जब से वी वी पेट मशीन लगने लगी है, तब से ई वी एम स्वतंत्र इकाई के रूप में काम नहीं करती है। विशेषज्ञों का मानना है कि जिस भी किसी मशीन में कोई चिप लगाई जाती है और सॉफ्टवेयर डाला जाता है उसे हैक करना संभव है। आजकल तो हैकिंग के एक्सपर्ट तक हो गए हैं। काम में लिए गए सॉफ्टवेयर को सार्वजनिक नहीं किये जाने से संदेह तो बना ही रहता है। चुनाव आयोग से यह मांग की गई है कि उसके द्वारा वी वी पेट के लिए उपयोग किए गए सॉफ्टवेयर को सार्वजनिक किया जाए ताकि मतदाता का विश्वास इस मशीन में बैठ सके। चुनाव के आधार पर ही राज्य एवं केंद्र की सरकार बनती है। अतः यह आवश्यक है कि चुनाव आयोग सभी शंकाओं और आपत्तियों का संतोषजनक निराकरण करे।

हाल ही में पूर्व चुनाव मुख्य चुनाव आयुक्त एस वाई कुरैशी ने भी चुनाव आयोग द्वारा विपक्षी दलों को मिलने का समय तक नहीं देने पर अपनी नाराजगी व्यक्त की है। उन्होंने तो यहां तक कहा कि यदि वह इस समय मुख्य निर्वाचन आयुक्त होते तो अविलंब मिलने का समय दे देते। संवाद के माध्यम से ही दलों को संतुष्ट किया जा सकता है कि, किसी भी प्रकार की खोट नीयत में नहीं है और वह पूरी निष्पक्षता, स्वतंत्रता और पारदर्शिता के साथ चुनाव कराना चाहता है। यदि चुनाव आयोग के पास छुपाने के लिए कुछ है ही नहीं, तो फिर राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से मिलने में उसे कोताही नहीं बरतनी चाहिये। कई लोगों का यह भी तर्क है कि जब कांग्रेस या अन्य दल जीते हैं तो ईवीएम पर प्रश्न नहीं किया जाता है। यह बात सही भी है, किंतु महत्वपूर्ण यह है कि ईवीएम के संबंध में, बिना यह देखे कि कौन जीता है और कौन हारा है , जो प्रश्न उठाए गए हैं ,उनका संतोषजनक समाधान करना निर्वाचन आयोग का दायित्व है। आयोग को इसका निर्वहन करना ही चाहिए ताकि पूरी चुनाव प्रक्रिया में मतदाता का विश्वास बना रहे।

यदि चुनाव आयोग ने विपक्षी दलों से संवाद करके वीवीपेट के संबंध में जो संदेह है ,उनका निराकरण नहीं किया, तो फिर यह मांग और जोर पकड़ती जाएगी कि कागज के मत पत्रों की पुरानी परंपरा को पुनः लाया जाए। जब यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देश कागज के मत पत्रों का ही प्रयोग कर रहे हैं तो हमारे देश में ऐसा करने में क्या आपत्ति हो सकती है? 2024 के लोकसभा चुनाव में कुल तीन -चार महीने ही बचे हैं और इस संबंध में चुनाव आयोग को तत्काल विपक्षी दलों को संतुष्ट करना चाहिए अन्यथा चुनाव प्रणाली की निष्पक्षता और स्वतंत्रता पर प्रश्न चिन्ह लगा ही रहेगा। चुनाव आयोग की हठधर्मिता किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहीं जा सकती। उसे इस बारे में अपने अहं को छोड़कर विपक्षी दलों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित करके स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। चुनाव आयोग ने हालांकि कुछ पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर अपनी ओर से प्रकाशित किए हैं किंतु यह वार्ता का विकल्प नहीं हो सकता है। आशा की जानी चाहिए कि लोकसभा चुनाव से पूर्व, मतदाताओं का विश्वास जीतने में चुनाव आयोग सफल हो पाएगा ताकि जो भी दल सत्ता में आए उसके प्रति कोई प्रश्न न उठें।

- अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
आई.ए.एस. (रिटायर्ड)

प्राणी शस्त्र विज्ञान में हालिया रुझान

प्रो. अशोक कुमार

प्राणी शस्त्र विज्ञान एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है जो जानवरों को युद्ध और अन्य सैन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग करने का अध्ययन करता है। हाल के वर्षों में, इस क्षेत्र में कई नए रुझान उभरे हैं।

प्राणी-आधारित हथियारों का विकास

एक प्रमुख रुझान प्राणी-आधारित हथियारों के विकास में है। इन हथियारों में जानवरों को शामिल किया जाता है जिन्हें दुश्मनों को नुकसान पहुंचाने या उन्हें विचलित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उदाहरणों में शामिल हैं। उदाहरणों में शामिल हैं:

सैन्य कुत्ते: सैन्य कुत्तों का उपयोग सैनिकों की सुरक्षा, बम और विस्फोटकों का पता लगाने और अन्य कार्यों के लिए किया जाता है।

घुड़सवार सेना: घुड़सवार सेना अभी भी कई देशों में उपयोग की जाती है। घोड़े की गति और गतिशीलता उन्हें युद्ध के मैदान पर एक मूल्यवान संपत्ति बनाती है।

समुद्री जानवर: समुद्री जानवरों का उपयोग पनडुब्बियों का पता लगाने, सुरंगों को साफ करने और अन्य कार्यों के लिए किया जाता है।

प्राणी-आधारित खुफिया में सुधार

एक अन्य रुझान प्राणी-आधारित खुफिया में सुधार है। जानवरों की उत्कृष्ट गंध और श्रवण क्षमताओं का उपयोग दुश्मनों को ट्रैक करने, विस्फोटकों का पता लगाने और अन्य खुफिया जानकारी एकत्र करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरणों में शामिल हैं:

मधुमक्खियां: मधुमक्खियों का उपयोग बम और विस्फोटकों का पता लगाने के लिए किया जा सकता है। उनकी गंध की तीव्र भावना उन्हें इन पदार्थों को सूंघने की अनुमति देती है, भले ही वे सूक्ष्म मात्रा में हों।

चमगादड़: चमगादड़ों का उपयोग अंधेरे में दुश्मनों को ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है। उनकी श्रवण क्षमता उन्हें उच्च आवृत्ति की आवाजों को सुनने की अनुमति देती है जो मनुष्य नहीं सुन सकते।

प्राणी-आधारित चिकित्सा में अनुप्रयोग

प्राणी-आधारित चिकित्सा में भी अनुप्रयोगों की संभावना है। उदाहरण के लिए, जानवरों को सैनिकों के लिए चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। वे घायल सैनिकों को ले जाने, प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने और अन्य कार्यों में सहायता कर सकते हैं।

सामाजिक और नैतिक चिंताएं

प्राणी शस्त्र विज्ञान के साथ कुछ सामाजिक और नैतिक चिंताएं भी हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग इस बात से चिंतित हैं कि जानवरों का युद्ध में उपयोग करना क्रूर है। दूसरों को चिंता है कि जानवरों का उपयोग हथियारों के रूप में करना उन्हें दुश्मनों के लिए आसान लक्ष्य बना सकता है।

उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का विकास: वैज्ञानिक और इंजीनियरों ने प्राणी शस्त्र विज्ञान में उपयोग के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं। इनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग, और जैव प्रौद्योगिकी शामिल हैं।

प्राकृतिक दुनिया से सीखना: वैज्ञानिक और इंजीनियर प्राकृतिक दुनिया से सीखकर प्राणी शस्त्र विज्ञान में नए विचारों को विकसित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, वे बिच्छू के जहर से विषाक्त पदार्थ विकसित कर रहे हैं जो जैविक ऊतक को नष्ट कर सकते हैं।

कुल मिलाकर, प्राणी शस्त्र विज्ञान एक जटिल और विवादास्पद क्षेत्र है। हाल के वर्षों में इस क्षेत्र में कई नए रुझान उभरे हैं, लेकिन इससे जुड़ी सामाजिक और नैतिक चिंताएं भी हैं।

- प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, वैदिक विश्वविद्यालय निंबहारा, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, अध्यक्ष आईएसएलएस, प्रिसिडेंट सोशल रिसर्च फाउंडेशन, कानपुर।

आयुर्वेद विश्वविद्यालय में फूड-प्लेनेट-हेल्थ विषय पर वेबिनार

जोधपुर, (कासं)। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति की अध्यक्षता में वीगन डाइट को बढ़ावा देने के संबंध में फूड-प्लैनेट- हेल्थ विषय पर वीगन आउटरीच सोसाइटी के सहयोग से वेबिनर का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता कर रहे माननीय कुलपति प्रो. प्रजापति ने कहा है कि वीगन डाइट या वेजिटेरियन लाइफ स्टाइल आज के समय में काफी ट्रेंडिंग है।

कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं वीगन डाइट के प्रचार-प्रसार पर काम कर रही है एवं कई सेलेब्रिटीज बड़े गर्व से खुद को वीगन घोषित कर रहे हैं। वेबिनार का उद्देश्य आमजन में वीगन लाइफस्टाइल के प्रति जागरूकता फैलाने, आहार के लिए पशु क्रूरता पर नियंत्रण तथा पशु अधिकार जैसे मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के साथ वीगन डाइट से जुडे भ्रमों को दूर करना, वीगन

■ वेबिनार का उद्देश्य आमजन में वीगन लाइफस्टाइल के प्रति जागरूकता फैलाना है

उत्पादों का प्रमोशन, पशुओं के प्रति करुणा, वीगन डाइट से स्वास्थ्य तथा पर्यावरण पर पडने वाले सकारात्मक प्रभावों पर चर्चा करना है।

वेबिनार की मुख्य वक्ता वीगन आउटरीच सोसाइटी की समन्वयक निजा ने बताया है कि मांसाहार दुनिया के सभी हिस्सों में प्रमुखता में खाया जाने वाली आहार है, वहीं शाकाहार की बात करें तो पौधों व खेती से मिलने वाले आहार के साथ गाय भैंस या कुछ अन्य जानवरों से मिलने वाला दूध, दूध से बनने वाले दही, घी या पनीर जैसे खाद्य पदार्थ, डेयरी उत्पाद शाकाहार में ही गिने जाते हैं। आमतौर पर लोगों में यह धारणा है कि डेयरी उत्पाद एवं मांसाहार बेहतर पोषण के स्त्रोत हैं, लेकिन वीगन डाइट के अंतर्गत पेड-पौधों या खेती से मिलने वाले आहार तथा उत्पादों का जरूरी मात्रा में इस्तेमाल किया जाए तो बगैर किसी जीव जंतु को नुकसान पहुंचाए शरीर को पूर्णतः पोषित रखा जा सकता है। इससे स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण व वातावरण को बेहतर फायदे मिलते हैं। कार्यक्रम के संयोजक एवं सी.एच.आर.डी. के निर्देशक डॉ. राकेश शर्मा तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. राजेन्द्र पूर्विया ने बताया कि वीगन जीवनशैली के प्रति लोगों में जागरूकता लाने व जनसामान्य तक इसका प्रसार करना इस वेबिनर के आयोजन का उद्देश्य था। वेबिनार के दौरान विश्वविद्यालय संघटक आयुर्वेद महाविद्यालय, होमियोपैथी महाविद्यालय व प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग महाविद्यालय के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डॉक्टर सी.आर. चौधरी ने दुबई में शोधपत्र पेश किया

जोधपुर, (कासं)। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) के हेल्थ सेक्टर में बढ़ते आधुनिक योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दुबई में आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस ओन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन हेल्थ केयर एप्लीकेशन में श्वसन विभाग के सीनियर प्रोफेसर एवं कमला नेहरू चेस्ट हॉस्पिटल जोधपुर के अधीक्षक डॉक्टर सी आर चौधरी ने विश्व स्तर के प्लेटफॉर्म पर शानदार शोध पत्र पेश किया।

डॉक्टर सी.आर. चौधरी

अंतरराष्ट्रीय रीसर्च फाउंडेशन ने इस शानदार शोध पत्र प्रस्तुति की सराहना की। डॉक्टर सी आर चौधरी ने अपने विभाग, इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रीसर्च,एम्स जोधपुर, एवं आई आई टी जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में हो रही आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) के विभिन्न प्रकार के श्वास रोगो के त्वरित निदान एवम सटीक ईलाज में रिसर्च स्टडी के बारे में भी प्रेजेंटेशन दिया। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की (मोर प्रिडिक्शन/अनुमान) की मदद से आने वाले समय में विभिन्न प्रकार की बीमारियो के बारे में तथा अन्य समस्याओं जेसे रोगी की कब छूटी होगी, कब रोगी गंभीर होगा, कब रोगी दुबारा भर्ती होगा, कब रोगी को गंभीर अटैक होगा के बारे में पता लगने से बीमारियो के निदान में ट्रीमेंडियस डिफरेंट आएगा। जिससे जटिल रोगों के निदान और उपचार एवम रिकॉर्ड में सहायता मिलेगी।

सेना दिवस पर आर्मी ने अपनी ताकत दिखाई

जैसलमेर, (नि.सं.)। सेना दिवस के मौके पर भारत-पाक सरहद फील्ड फायरिंग रेंज में भारतीय सेना ने अपनी ताकत दिखाते हुए युद्धाभ्यास किया। भारतीय सेना की बेटल एक्स डिवीजन ने आपात परिस्थितियों के लिए हमेशा तैयार रहने का अभ्यास दिखाया।

अभ्यास के दौरान भारतीय सेना ने फायरिंग रेंज में अपनी मारक क्षमता का शानदार प्रदर्शन करते हुए आधुनिक हथियारों व टीम वर्क के साथ लड़ाई के वक्त किस तरह पूरी ताकत के साथ दुश्मन के इलाकों में घुसकर उन्हें मुंह तोड़ जवाब देने के लिए अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। सोमवार को सेना दिवस के मौके पर रेगिस्तान में भारतीय सेना के जांबाज जवानों ने हुंकार भरी। भारतीयसेना की बैटल एक्स डिवीजन ने रेत के समंदर में अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हुए दमखम दिखाया। भारतीय सेना समय-समय पर युद्धाभ्यास के माध्यम से अपने जवानों के युद्ध कौशल को परखने के साथ-साथ उसे और बेहतर करने का कार्य करती है।

फील्ड फायरिंग रेंज में अभ्यास के दौरान भारतीय सेना ने अपनी मारक क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया। वहीं, आधुनिक हथियारों व टीम वर्क के

■ फायरिंग रेंज में भारतीय सेना ने युद्धाभ्यास किया।

साथ लड़ाई के वक्त किस तरह पूरी ताकत के साथ दुश्मन के इलाकों में घुसकर उन्हें मुंह तोड़ जवाब देने के गुर सीखे। जैसलमेर में सेना की फील्ड फायरिंग रेंज में टैंकों के किए गए धमाकों की गूंज के बीच देश के जांबाज जवानों ने दुश्मन के काल्पनिक इलाके में घुसकर स्ट्राइक की और देखते ही देखते दुश्मन के घर में घुसकर उनके ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया। साउथ कमांड इंडियन आर्मी ने अपने एक्स (ट्विटर) हेंडलपर जानकारी साझा करते हुए लिखा लड़ाई के लिए ताकत बनाना-बैटल एक्स डिवीजन के कठोर योद्धाओं ने रेगिस्तान में युद्ध कौशल में महारत हासिल करने के लिए युद्ध प्रक्रियाओं का अभ्यास और सत्यापन किया। प्रशिक्षण ने एकीकृत संचालन में सफलता के लिए लचीलापन, टीम वर्क और बेजोड़ धैर्य का प्रदर्शन किया।

"सीखो पैसे की भाषा" का आयोजन

कोटक म्यूचुअल फंड ने सीबीएसई के साथ साझेदारी में निवेशक शिक्षा और जागरूकता पहल शुरू की

जोधपुर। कोटक म्यूचुअल फंड ने जोधपुरमें केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के साथ साझेदारी में अपनी निवेशक शिक्षा और जागरूकता पहल, सीखो पैसे की भाषा का आयोजन किया। यह पहल शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों की एक व्यापक श्रृंखला आयोजित करके वित्तीय साक्षरता का मार्ग प्रशस्त करने के लिए तैयार है, जिसका उद्देश्य शिक्षकों को उनकी वित्तीय समझ को विससित करने के लिए बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाना है, और अंततः जो संभावित प्रगतिशील भविष्य की दिशा में भारत की यात्रा में योगदान करने में मदद कर सकता है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य राजस्थान में 5100 से अधिक और जोधपुर में 525 सीबीएसई शिक्षकों को वित्तीय साक्षरता के बारे में शिक्षित करना और उनमें जागरूकता पैदा करना है। इनमें 50 महिलाओं के होने की उम्मीद है, जो समान वृद्धि और विकास को बढ़ावा देने पर जोर देती है। इस पहल के हिस्से के रूप में, कोटक म्यूचुअल फंड ने सेंटर

■ कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को वित्तीय साक्षरता के बारे में शिक्षित करना और उनमें जागरूकता पैदा करना है

फॉर इन्वेस्टमेंट एजुकेशन एंड लर्निंग (सीआईईएल) से 500 से अधिक कुशल प्रशिक्षकों को अपने साथ जोड़ा है, जो यह सुनिश्चित करते हुए कि पूरे कार्यक्रम में गुणवत्ता और प्रासंगिकता बरकरार रखी जाए, प्रभावशाली सत्रों का नेतृत्व करेंगे।

प्रिंसिपल हेनाराम चौधरी, डायमंड एकेडमी (बाना रोड, जोधपुर) ने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से अपने शिक्षकों को धन प्रबंधन की अनिवार्यताओं को समझने में मदद करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। यह हमारे शिक्षकों को जिम्मेदारी से वित्तीय निर्णय लेने की जानकारी प्रदान करेगा।

कोटक म्यूचुअल फंड के मार्केटिंग और एनालिटिक्स, डिजिटल बिजनेस प्रमुख किंजल शाह ने बताया कि इस निवेशक शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम सीखो पैसे की भाषा के माध्यम से, हम वित्तीय सशक्तिकरण के लिए गहराई से प्रतिबद्ध हैं। हमारा मानना है कि शिक्षक हमारे देश की नियति को आकार देने और नई पीढ़ी को ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सीबीएसई के साथ हमारी साझेदारी वित्तीय साक्षरता और निवेश के बारे में सम्मानित शिक्षकों को शिक्षित करने और जागरूकता पैदा करने के लिए है। सामूहिक रूप से, हम एक ऐसे भविष्य को आकार दे सकते हैं जहां वित्तीय रूप से जागरूक शिक्षक अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं। यह पहल आर्थिक रूप से सशक्त भारत की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका उद्देश्य प्रगति और विकास के लिए देश की आकांक्षा के साथ पूरी तरह से तालमेल बिठाना है। सीखो पैसे की भाषा से आशा है कि यह देश के वित्तीय ढांचे को आकार देने में पूरी तरह मदद करेगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 16 जनवरी 2024

पौष मास शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, विक्रम सम्वत 2080, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 4.35 तक, परिद्य योग रात्रि 8.01 तक, कौलव करण दिन 11.07 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मेष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

आज सवार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 4.38 तक है। रवियोग रात्रि 4.30 तक बना रहेगा। आज मंगल उदय पूर्व में रात्रि 10.38 पर होगा। आज अनुरुपा छठ पंचक है।

श्रेष्ठ चौघडिया - अमृत-सूर्योदय से 8.40 तक, शुभ 9.59 से 11.11 तक, चर - 4.54 से 5.18 तक, लाभ-अमृत 11.58 से 4.32 तक।

राहुकाल - 3.00 से 4.30 तक, सूर्योदय 7.21 सूर्यास्त 5.51

मेष

घर-गृहस्थी के कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी। परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड सकता है।

वृष

आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामुहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या

घर-परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

तुला

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के माध्यम से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में शुभ कार्य संपन्न हो सकते हैं।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बडेगा। वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।